Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

राम भक्तिकाव्य तथा उसके कवियों का अध्ययन

Neha Rao*

PhD Scholar, Indian Language Centre, Jawaharlal Nehru University, New Delhi - 110067

सार – ***भक्ति परम्परा का विकास प्राचीनकाल में ही हो गया था। राम भक्ति के कवियों ने अपनी मधुर वाणी से जनता के तमाम स्तरों को राममय कर दिया। राम भक्त कवियों ने सभी धर्मों में समन्वय स्थापित किया। प्रस्तुत शोध पत्र में राम भक्ति भावना और साहित्य पर चर्चा की गई है। यद्यपि रामकाव्य का आधार संस्कृत साहित्य में उपलब्ध राम-काव्य और नाटक रहें हैं। हिन्दी में राम भक्ति साहित्य का वास्तविक सूत्रपात भक्ति काल से हुआ। यद्यपि वीरगाथा काल में भी राम भक्ति संबंधी कतिपय अंश मिलते हैं तथापि इसका विस्तृत और वास्तविक प्रारंभ रामानुजाचार्य तथा रामानंद से हुआ। इस परंपरा के सर्वश्रेष्ठ भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास हुए जिन्होंने भक्ति काल के श्रेष्ठतम प्रबंधकाव्य 'रामचरितमानस' के माध्यम से वाल्मीकि के पश्चात राम भक्ति साहित्य में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। केशवदास, सेनापति आदि ने भी अपनी कृतियों से इस भक्ति धारा को ऐश्वर्य प्रदान किया। राम भक्तिधारा के अंतर्गत मर्यादावादिता, आदर्शवादिता, समन्वय की भावना तथा उत्थान का स्वर प्रमुख रहा और राम भक्ति धारा के कवियों ने साहित्य की विविध काव्य शैलियों का प्रयोग कर इस धारा की वृद्धि की। इस साहित्य ने समाज को बहुत कुछ दिया और परमार्थ, मानवतावाद, एकता तथा लोक मंगल की भावना आदि से मानव समाज को उपकृत किया।***

कुंजीशब्द - भक्ति परम्परा, राम भक्ति, रामकाव्य

----------X----------

प्रस्तावना

भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारामें रामभक्ति काव्य की लंबी परम्परा रही है। वेदों में कुछ स्थलों पर 'राम' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'राम' के जीवन से संबंधित पहला महाकाव्य 'वाल्मीकी रामायण' को स्वीकार किया जाता है। इस प्रेरणा से ही राम काव्य की परम्परा शुरू हई वाल्मीकी रामायण ने केवल देश में ही नही बल्कि विदेश को भी प्रभावित किया, और राम साहित्य रचा जाने लगा। वाल्मीकी की के राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे। उसमें अवतारवाद नहीं था। उपनिषद् में राम को अवतार स्वीकार कर लिया गया था। पुराणों में भी राम काव्य दृश्य के प्रसंग दिखाई देते है। डॉ. सोनटक्केजीके अनुसार 'अगस्त-सुतीक्षण-सम्वाद संहिता में राम के अनेक अलौकिक गुणों का समावेश कर उन्हें विशेष महत्व दिया गया। अध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, अद्भूत रामायण, युशुण्डि रामायण, हणुमं संहिता, राघवोल्लास आदि ग्रंथों में राम कथा की धार्मिक एवं दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत की गई। वराह, अग्नि, लिंग, वामन, ब्रम्ह, गरुड, स्कन्द, पद्मवैवर्त आदि पुराणों में राम कथा के अनेक प्रसंग दृष्टिगोचर होते हैं। "बौद्ध, जैन ग्रंथों में भी राम कथा का प्रयोग हुआ है। धार्मिक ग्रंथों के अतिरिक्त अन्य संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश साहित्य में भी राम काव्य की सुदीर्घ परम्परा रही है।

राम काव्य का उद्भव वाल्मीकी रामायण से शुरू हुआ है। पश्चात रामभक्ति रामानन्द द्वारा विकसित होकर तुलसी के 'रामचरित मानस' के द्वारा हिन्दी भक्ति साहित्य में प्रवाहित हुई। तुलसी पूर्व विष्णुदास, अग्रदास, ईश्वरदास आदि ने रामकथा लिखी है किन्तु राम काव्य के मुख्य प्रवर्तक तुलसी ही रहे हैं।

भक्ति का स्वरूप

रामभक्त कवियों के काव्य में सेवक-सेव्य भाव है। वे दास्य भाव से राम की आराधना करते हैं। वे स्वंय को क्षुद्रतिक्षुद्र तथा भगवान को महान बतलाते हैं। राम काव्य में ज्ञान, कर्म और भक्ति की पृथक-पृथक महत्ता स्पष्ट करते हुए भक्ति को उत्कृष्ट बताया गया है। यदयपि वे ज्ञान मार्ग को कठिन तथा भक्ति मार्ग को सहज, सरल स्वीकार करते हैं। रामानंद ने विष्णु के अन्य रूपों में रामरूप को ही लोक के लिए अधिक कल्याणकारी समझ छांट लिया और एक सबल सम्प्रदाय का संगठन किया। इसके साथ-साथ ही उन्होंने उदारतापूर्वक मनुष्य मात्र को इस सुलभ सगुण भक्ति का अधिकारी माना और वर्ण भेद, जातिभेद, देशभेद आदि का विचार भक्ति मार्ग से दूर रखा। इसी प्रकार राम साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा गया।

www.ignited.in

राम साहित्य का विवरण देने से पहले साहित्य को जान लेना आवश्यक है। साहित्य शब्द को परिभाषित करना कठिन है जैसे पानी की आकृति नहीं होती जिस सांचे में ढालो वह ढल जाता है, उसी तरह का तरल है यह शब्द। कविता, कहानी, नाटक, निबंध, रिपोर्ताज, जीवनी, रेखाचित्र यात्रा वृतान्त समालोचना बहुत से सांचे हैं। संस्कृत में एक शब्द वाडमय। भाषा के माध्यम से जो कुछ भी कहा गया, वह वाड़मय है। साहित्य के संदर्भ में संस्कृत की इस परिभाषा में मर्म है - शब्दार्थौ सहितो काव्यम। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण' नाम ग्रन्थ लिखकर साहित्य शब्द को व्यवहार में प्रचलित किया। भाव किसी सृजन को वह गहराई की परिधि में लाता है। कितनी सादगी से निदा फाजली कह जाते हैं

मैं रोया परदेस में भीगा मां का प्यार

दुख ने दुख से बात की, बिन चिट्ठी बिन तार।

रामकाव्य की विशेषताएँ

केशव पर मुख्यत दोष लगाया जाता है कि उन्होंने रामचंद्रिका में राम कथा को मनमाने ढंग से विवृत और विश्रृंखलित कर दिया है। अनेक धार्मिक प्रसंगों को छोड़ दिया है या संक्षिप्त कर दिया है, लेकिन यह निष्कर्ष सामान्यतः तुलसी की रामचरितमानस के साथ रामचंद्रिका की तुलना करने के कारण ही निकाला जाता रहा है। अधीकांश आलोचकों के सामने या तो संपूर्ण रामकथा सहित्य नहीं रहा' अन्यथा ध्यान देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वयं तुलसी ने भी राम कथा के परंपरागत रूपों से हटकर अपने समय की परिसिथतियों, अपनी विचारधारा और रुचि तथा तत्कालीन भारतीय वातावरण के अनुसार राम-कथा को एक नयी मर्यादा, नया आदर्श, नयी धार्मिक एवं नैतिक आस्था का रूप प्रदान किया है। ठीक इसी प्रकार केशव ने भी अपनी रुचि, लोक-रुचि तथा तत्कालीन परिसिथतियों एवं विचारों के अनुरूप राम कथा का वर्णन किया है। रामचंद्रिका की रचना करते समय केशव के सामने तुलसी और उनकी रामचरितमानस प्रेरणा स्रोत के रूप में नहीं रही, वरन संस्वृत का रामकाव्य साहित्य रहा। विशेष रूप से वह परंपरा जिसमें घटनाओं के ऊहात्मक तथा वक्रोकित प्रधान वर्णन एवं भाषा, छंद, अलंकार आदि की विशिष्टता से चमत्कार उत्पन्न करने की तथा राम को मुख्यतरू एक राजा के रूप में मानकर उनके राज वैभव एवं दाम्पत्य, श्रृंगार का खुलकर वर्णन करने की प्रवृत्ति प्रधान रही हैं। मुख्यतरू केशव के प्रेरणा स्रोत श्वाल्मीकि रामायण, आध्यात्म रामायण, हनुमन्नाटक, प्रसन्न राघव आदि संस्कृत ग्रंथ रहे है। रामचंद्रिका की कथा का मूल आधार वाल्मीकि वृत रामायण है।

काव्य शैलियाँ

रामकाव्य में काव्य की प्रायः सभी शैलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। तुलसीदास ने अपने युग की प्रायः सभी काव्य-शैलियों को अपनाया है। वीरगाथाकाल की छप्पय पद्धति, विद्यापति और सूर की गीतिपद्धति, गंग आदि भाट कवियों की कवित्त-सवैया पद्धति, जायसी की दोहा पद्धति, सभी का सफलतापूर्वक प्रयोग इनकी रचनाओं में मिलता है। रामायण महानाटक (प्राणचंद चौहान) और हनुमाननाटक (हृदयराम) में संवाद पद्धति और केशव की रामचंद्रिका में रीति-पद्धति का अनुसरण है।

रस: रामकाव्य में नव रसों का प्रयोग है। राम का जीवन इतना विस्तृत व विविध है कि उसमें प्रायः सभी रसों की अभिव्यक्ति सहज ही हो जाती है। तुलसी के मानस एवं केशव की रामचंद्रिका में सभी रस देखे जा सकते हैं। रामभक्ति के रसिक संप्रदाय के काव्य में श्रृंगार रस को प्रमुखता मिली है। मुख्य रस यद्यपि शांत रस ही रहा।

भाषा: रामकाव्य में मुख्यतः अवधी भाषा प्रयुक्त हुई है। किंतु ब्रजभाषा भी इस काव्य का श्रृंगार बनी है। इन दोनों भाषाओं के प्रवाह में अन्य भाषाओं के भी शब्द आ गए हैं। बुंदेली, भोजपुरी, फारसी तथा अरबी शब्दों के प्रयोग यत्र-तत्र मिलते हैं। रामचरितमानस की अवधी प्रेमकाव्य की अवधी भाषा की अपेक्षा अधिक साहित्यिक है।

छंदः रामकाव्य की रचना अधिकतर दोहा-चौपाई में हुई है। दोहा चौपाई प्रबंधात्मक काव्यों के लिए उत्कृष्ट छंद हैं। इसके अतिरिक्त कुण्डलिया, छप्पय कवित्त, सोरठा, तोमर, त्रिभंगी आदि छंदों का प्रयोग हुआ है।

अलंकारः रामभक्त कवि विद्वान पंडित हैं। इन्होंने अलंकारों की उपेक्षा नहीं की। तुलसी के काव्य में अलंकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग मिलता है। उत्प्रेक्षा. रूपक और उपमा का प्रयोग मानस में अधिक है।

रामभक्ति परम्पराः

वैदिक और लौकिक संस्कृत में रामकथा

वाल्मीकि रामायण, महाभारत और भागवत पुराण मध्ययुगीन भारतीय संस्कृति, धर्म और साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। धर्म कथाओं में रामकथा का अपना विशेष महत्व है। रामकथा का सर्वप्रथम बृहत् काव्यगुण सम्पन्न, सुगठित और क्रमबद्ध रूप वाल्मीकि रामायण में मिलता है। वाल्मीकि राम कथा के प्रवर्तक थे। वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ दाक्षिणात्य, गौडीय और पश्चिमोत्तरीय उपलब्ध हैं रामकथा की दृष्टि से वाल्मीकि

www.ignited.in

रामायण ही प्राचीनतम् ग्रन्थ माना जाता है। जिस काव्य की रचना करने -- में महर्षि च्यवन असमर्थ रहे. वाल्मीकि ने उसे काव्य के रूप में प्रस्तुत किया। इसमें राम को एक मानव के रूप में अंकित किया गया है। वैदिक साहित्य में रामकाव्य का समग्र रूप क्रमशः चाहे न मिले पर उसके समस्त चारित्रिक बीज सूत्र अवश्य प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल में राम, दशरथ सीता, जनक, इक्ष्वाकु आदि नाम मिलते हैं। इसके अतिरिक्त ऐतरेय ब्राहमण, शतपथ ब्राहमण आदि साहित्य में भी राम, दशरथ, सीता का उल्लेख हुआ है।

सगुणराम भक्ति काव्य में समन्वय साधना

'समन्वय' शब्द सम अनु इ अच् द्वारा व्युत्पन्न है। इसका आशय है-नियमित क्रम, संयोग. पारस्परिक संबंध आदि। वस्तुतः परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाली वस्तओं या बातों के बीच पारस्परिक संबंध का निर्धारण करते हुए उनमें सामंजस्य स्थापित करना ही समन्वय है। समन्वय भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता है। नास्तिक बौद्धों द्वारा राम को बोधि सत्व मान लेना तथा आस्तिक बौद्धों द्वारा बुद्ध की अवतार रूप में प्रतिष्ठा इस समन्वय का ही परिणाम है। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति की समन्वयमूलकता के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं।

रामकाव्य धारा में समन्वय का आदर्श तलसी में ही प्रतिफलित हआ। उन्होंने इस आदर्श को रामचरित मानस' में अनेक दृष्टियों से निरूपित किया है। द्वैत और अद्वैत के बीच समन्वय को तुलसी ने अवतारवाद की प्रतिष्ठा करते हए ब्रहम को उपनिषदों और वेदान्त के अनुसार निर्गुण और निर्विशेष भी स्वीकार किया है। निर्गण और सगण का वह विवाद जो क्रमशः दर्शन और भक्ति के क्षेत्रों में विद्यमान था.को समाप्त करने के लिए उन्होंने राम को बार-बार निर्गुण सगुण स्वरूप बताया

(1) 'सगर्नाह अगुहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुराण बुध वेदा।।'

(2) 'अगुन सगुन दुई ब्रहम सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनुपा।।'

(3) 'जय सगुन निर्गुन रूप, रूप अनूप भूप सिरोमने।'

इसी प्रकार जगत की सत्यता और असत्यता के बीच गोस्वामी जी ने सुन्दर समन्वय स्थापित किया। जैसे

जगत की असत्यता - 'रजत सीम महँ मास जिमि जथा भान कर बारि।'

जगत की सत्यता - 'निज प्रभमय देहिं जगत केहि सन करहिं विरोध।'

भाग्य और पुरुषार्थ के समन्वय के लिए उन्होंने 'पुरुषारथ पूरब करम परमेस्वर परधान। तुलसी पैरत सरित ज्यों सहि काज अनुमान।' का तर्क प्रस्तुत किया। ईश्वर से जीव के भेद और अभेद के विवाद का परिहार उन्होंने इस आधार पर किया कि स्वरूप की दृष्टि से ईश्वर और जीव में अभेद है किन्तु ऐश्वर्य की दृष्टि से दोनों में भेद है। मक्त होने पर जीव ईश्वर का स्वरूप तो प्राप्त कर लेता है किन्तु ऐश्वर्य नहीं। शैवों और वैष्णवों के बीच विद्यमान विरोध का शमन उन्होंने स्वयं अपने आराध्य श्री राम से सेतबंध के अवसर पर शिव की पूजा के द्वारा कराया है। राम का स्पष्ट कहना है

'संकर प्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास।

ते नर करहिं कलप भवि घोर नरक महुँ बास।।'

साहित्य की समीक्षा

तुलसीदास के समूचे साहित्य में समन्वय भावना दृष्टिगोचर होती है। इस ओर संकेत करते हुए डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं- उनका सारा काव्य समन्वय की विरोह चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, ग्रार्हस्थ और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृत का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, कथा और तत्वज्ञान का समन्वय, ब्राम्हण्य और चण्डाल का समन्वय, पाण्डित और पाण्डित्य- रामचरित मानस शुरु से आखिर तक समन्वय का काव्य है।' अतरू तुलसी जनचेतनावादी नायक थे।

नहि दरिद्र कोइ दुखीन दीना।

नहि कोई अवुध न लच्छन हीरा।।

डॉ. राम विलास शर्मा ने लिखा है 'तुलसीदास का स्वप्न श्रमिक जनता के लिए धरोहर है जिससे प्रेरित होकर वह समाजवाद के लिए मंजिल-दर-मंजिल बढ़ती जायेगी। तुलसी का मानवप्रेम उनकी कविता का स्रोत है। उनके लिए साहित्य न तो सामंतों के मनोरंजन का साधन है, न निरुद्देश्य प्रयोग है। तुलसीदास की स्थापना साहित्य के प्रति सामंती विचारधाराओं से ही लड़ने में मदद नहीं देती, वह पूंजीवादी साहित्य सिद्धांतों से भी लड़ने में मार्ग दर्शन कराती है।' (परम्परा का मूल्यांकन पृष्ठ 83) इस प्रकार तुलसी का मानवीय सहानुभूति वाला भावलोक क्रांतिकारी है तथा जनचेतना को जागृत करने में समर्थ भी। इसी लोकचेतना के कारण वे भारतीय संस्कृति और जनता के प्रतिनिधि कवि हैं। प्रश्न उठता है तुलसी का सामाजिक यथार्थ

www.ignited.in

क्या है? यह सामाजिक यथार्थ है-जर्जर होती सामंती व्यवस्था को तोड़कर लोक-मंगलकारी मूल्यदृष्टि को अपनाना। तुलसी मूलतः मानववादी रचनाकार हैं। उनके राम का क्षात्रधर्म इसी भावना का जीवित संसार है।

डॉ. ग्रियर्सन ने कहा 'बुद्धदेव के बाद भारत में सबसे बड़े लोक नायक' तुलसीदास हैं। आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी साहित्य की भूमिका में कहा है कि 'भारत वर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। क्योंकि भारतीय समाज में नाना भांति की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएं, जातियाँ, आचार और विचार-पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्धदेव समन्वयकारी थे, गीता में समन्वयकारी चेष्टा है, और तुलसीदास भी समन्वयकारी थे। वे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक विषमताओं-पीड़ाओं के भीतर से स्वयं गुजर चुके थे। फलतः लोक और शास्त्र के इस व्यापक ज्ञान ने उन्हें अभूतपूर्व सफलता दी। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, साहित्य और वैष्णव परंपरा का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृत का समन्वय, निर्गुण एवं सगुण का समन्वय, कथा और तत्वज्ञान का समन्वय, ब्राह्मण और चाण्डाल का समन्वय, पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय-रामचरित मानस शुरू से आखिर तक समन्वय का काव्य है। ध्यातव्य है कि इस महान समन्वय के प्रयत्न का आधार उन्होंने रामचरित को बनाया है। वस्तुतः इससे सुंदर चनाव हो नहीं सकता था। कृष्ण भक्ति खूब प्रचलित थी पर तुलसीदास मन ही मन मधुर भाव की उपासना-परकीया प्रेम की उपासना पर झल्लाए हुए थे। निर्गुण वैरागियों, अलखवादियों गोरख जगायो जोग वालों पर भी उन्हें गुस्सा कम न था पर वे बंधुता का भाव हर कीमत पर लाना चाहते थे। कारण, समन्वय का अर्थ ही है कुछ झुकना कुछ दूसरों को झुकने के लिए बाध्य करना, तुलसीदास को ऐसा करना पड़ा है। तुलसी ने शंकर के अद्वैत और रामानुजाचार्य के विशिष्ट द्वैतवाद में समन्वय किया है। 'विनय पत्रिका' में तुलसी ने माया का निरूपण शंकर की भांति ही किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. रामभक्ति परम्परा का अध्ययन

2. राम भक्ति साहित्य का अध्ययन

अनुसंधान क्रियाविधि

द्वितीयक स्रोत

माध्यमिक डेटा कई संसाधनों से एकत्र किया जाता है जैसे विभिन्न पुस्तकालयों, पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, इंटरनेट, पत्रिका, और समाचार पत्रों में साहित्यिक कॉलम, आधिकारिक वेबसाइट

डेटा विश्लेषण

राम भक्ति काव्य के प्रमुख कवि

भक्तिकालीन हिन्दी सगुण भक्ति काव्य के अंतर्गत राम भक्ति काव्य के प्रमुख प्रवर्तक तुलसीदासजी है। रामभक्ति की प्रतिष्ठा रामानन्द द्वारा हुई रामानन्द की भक्ति और विचार धारा से तुलसीदास प्रभावित थे। राम भक्ति काव्य विकास में कई कवियों ने अपना योगदान दिया है उनमें प्रमुख है - अग्रदास, ईश्वरदास, तुलसीदास, जन जसवंत, नाभादास, केशवदास, प्राणचंद चौहाण आदि है। यहाँ सभी का संक्षेप में परिचय देना समीचीन होगा।

राम साहित्य के प्रवर्तक-महाकवि तुलसीदास

तुलसीदास के जन्म संबंध में अधिकांश विद्वानों में मतभेद है। अन्तरू साक्ष्य के आधार पर इनकी जन्मतिथि सं. 1589 (सन् 1532) अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होती है। इनका जन्मस्थान राजापुर बताया जाता है। जनश्रुति के आधारपर तुलसीदासजी के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। इनका विवाह दीनबन्धु पाठक की कन्या रत्नावली से हुआ था। इनका बचपन विपन्नावस्था में गुजर चूका था। माता-पिता के द्वारा छोड दिये जाने पर बाबा नरहरिदास ने इनका पालन-पोषण किया और ज्ञान-भक्ति की शिक्षा भी दी। विवाह पश्चात उन्हें सन्तान प्राप्ति हुई थी किन्तु अल्पायु में ही उसकी मृत्यु हुई। पत्नी के प्रति अत्याधिक आसक्ति थी। एक बार पत्नी द्वारा भर्त्सना- 'लाज न आई आपको दौरे आएह साथ' मिली तब वे दाम्पत्य जीवन से विमुख होकर प्रभुप्रेम की ओर उन्मुख हुए। उन्होंने कई जगह की तीर्थयात्रा की। अंततरू काशी में ही अपना स्थायी निवास बनाया। इसी अवस्था में साहित्य सर्जना आरंभ हुई। इनके गुरु नरहरि माने जाते हैं। इनके गुरु ने ही राम-कथा सुनाकर राम-भक्ति की ओर प्रवृत किया था। उनकी मृत्यु अत्यंत पीडादायी अवस्था में हुई।

तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या बारह है जो प्रामाणिक मानी जाती है, वह क्रमानुसार इस प्रकार है- वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, रामलला नहछू, जानकी मंगल, रामचरितमानस, पार्वती मंगल, कृष्ण गीतावली, गीतावली, विनयपत्रिका, दोहावली, वरवैरामायण और कवितावली आदि।

'वैराग्य संदीपनी में संत महिमा का वर्णन किया गया है। 'जानकी मंगल' में राम-जानकी विवाह वर्णन है। 'पार्वती मंगल'

www.ignited.in

में पार्वती के जन्म और विवाहोत्सव का वर्णन है। कृष्णगीतावली' में कृष्ण की बाल लीला एवं गोपियों का विरह वर्णन है। 'विनयपात्रिका' में राम के प्रति कवि का विनयभाव अभिव्यक्त है। 'कवितावली' में कवित्त शैली में लिखा गया संग्रह है। 'रामचरित मानस' में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्रानुकूल प्रसंगों को विवेचित किया है।

तुलसीदास के लेखन पर तत्कालिन परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। तुलसीदास कालीन समय का समाज नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से हासोन्मुख था। अपनेयुगिन राजनीतिक स्थिति की आलोचना इस प्रकार की है

'गोंड गँवार नृपाल महि, यवन महा महिपाल।

साम न दाम न भेद कलि केवल दण्ड कराल।।'

शासक अधिकारी के लिए लिखा है

'जासुराज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक अधिकारी'

तुलसी समकालीन समाज में उच्च वर्ग में विलासिता, जाति-पॉति की प्रथा अधिक कठोर हो रही थी। मुस्लिम शासकों के अत्याचार बढ़ रहे थे। धार्मिक -हास हो रहा था। आर्थिक विपन्नता थी। तुलसीदासने स्वंय कहा है

'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,

बनिक को न बनिज न चाकर को चाकरी'

तुलसी की मान्यता यह है कि एक अच्छे समाज एवं राष्ट्र निर्माण के लिए वर्ण व्यवस्था का होना जरुरी है

बरनाश्रम निज निज धरम, निरत वेद पंथ लोग।

तल हि सदा पावहि सुख, जहिं भय शोक न रोग।

तुलसी ने अपनी रचनाओं के लिए लोक भाषा को चूना। पूर्वी व पश्चिमी अवधी पर समाज अधिकार था। कहीं-कहीं ब्रज भाषा का भी प्रयोग किया है। इनकी भाषा संस्कृत के पण्डित होने कारण संस्कृत की कोमलकान्त पदावली की सुमधुर झंकर है। उन्होंने अपनी रचना शैली में महाकाव्य, मुक्तक, गीति इन तीनों का प्रयोग सफलता पूर्वक किया।

तुलसी ने अपनी रचनाओं में करुण, हास्य, वीर, भयानक बीभत्स आदि रसों का परिपाक मिलता है। उन्होंने उपमा, उत्प्रेक्षा, रुपक, संदेह, व्यतिरेक, अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। साथही उन्होंने छप्पय, दोहे, चौपाई, कुण्डलिया, सवैया, तोमर, त्रिभंगी आदि छंदों का सफलता पूर्वक प्रयोग किया है।

स्वामी रामानन्द

स्वामी रामानन्दजी का जन्म 1400 से 1470 ई. माना गया है। इनका जन्म काशी में हुआ था और इन्होंने वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य राघवानन्द से दीक्षा ग्रहण की थी। वर्णाश्रम में आस्था रखने वाले रामानन्दजी भक्ति मार्ग में उन्होंने सभी को समान मानते हुए निम्न वर्ग के भक्तों को अपना शिष्यत्व प्रदान किया। इनके शिष्यों में कबीर, रैदास, धन्ना, पीपा आदिथे।

स्वामी रामानन्दजी संस्कृत के पंडित थे। इन्होंने 'वैष्णव मताब्द भास्कर' और श्रीरामार्जुन-पध्दति यह प्रमुख ग्रंथ लिखे हैं। रामानन्दजी की भक्ति-पध्दति का प्रभाव राम-भक्ति परम्परा पर लक्षित होता है। गोस्वामी तुलसीदास भी इनकी विचारधारा से प्रभावित

थे।

रामानन्द जी का हिन्दी में हनुमान की स्तुति का पद इस प्रकार है -

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।

जाके बल भरते महि काँपै। रोग सोग जाकी सियान ज्यांपै।

अंजनीसुत महाबलदायक। साधु संत पर सदासहायक।।

गाढ परै कवि सुमिरों तोही। होहु दयाल देहु जस मोहि।।

नाभादास

यह तुलसीदास कालीन रामभक्त कवि थे। संवत 1657 के लगभग वर्तमान थे। नाभादास अग्रदास के शिष्य थे। इनका प्रसिध्द ग्रंथ 'भक्त माल' संवत 1642 के पीछे बना और प्रियदासजी ने उसकी टीका लिखी। इनकी 'अष्टयाम' की रचना रसिक-भावना को लेकर हुई है जिसमें राम की लीलाओं का वर्णन किया गया है।

ईश्वरदास

ईश्वरदासजी का जन्म 1480 ई. माना जाता है। उनकी सुप्रसिध्द कृति 'सत्यवती कथा' है इसका रचना काल 1501 ई. है। रामकथा से संबंधित इनकी 'भरत मिलाप' और अंगद पैज यह दो रचनाएँ प्रचलित है। 'भरत मिलाप' में राम के वनगमन के उपरान्त 'भरतराम' भेट के करुण-कोमल प्रसंग को इस काव्य-कृति में पद्यबध्द किया गया है। ईश्वरदास की दूसरी रचना अंगद पैज में रावण की सभा में अंगद के पैर जमाकर डट जाने का वीररसपूर्ण वर्णन मिलता है।

www.ignited.in

निष्कर्ष

रामभक्ति शाखा के कवियों ने समय, परिस्थिती और काल के अनुरुप अपना काव्य सृजन किया हैं। इन कवियों ने उत्कृष्ट काव्य सृजन का परिचय दिया हैं। कविता इनकी साध्य नहीं साधन हैं। इनका साध्य रामभक्त हैं। अपने साध्य तक पहुँचने के लिए इन कवियों ने जिस साधन को स्वीकार किया है उसे इतना समर्थ और पूर्ण बना दिया है, उसका मानस जनमानस हो गया। इस काव्य में मानव जीवन की विविध दशाओं का सहज, सरल, स्वाभाविक और प्रभावी चित्रण हुआ हैं। इन कवियों ने एक ओर धर्मरक्षा, लोक हित एवं समाज के उत्थान में योग दिया है तो दूसरी ओर काव्य को उदात्त, उत्कृष्ठ एवं लोक मंगलकारी रुप प्रदान करने का स्तुत्य कार्य किया हैं। तुलसीदास जी ने अपने काव्य में रामकथा के माध्यम से जो आदर्श स्थापित किया है उसके पीछे लोक कल्याण की भावना विद्यमान है। अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति को अनेक प्रसंगों, घटनाओं के माध्यम से वर्णित किया है। यदि सच्चे अर्थों में कोई व्यक्ति भारतीय संस्कृति से परिचित होना चाहता है तो उसे तुसलीदास द्वारा रचित रामकाव्य से बढ़कर दूसरा साधन न मिलेगा।

जब-जब होइ धरम की हानि बढ़हि असुर अधम अभिमानी।

तब-तब धरि प्रभु मनुज सरीरा हरहिं सकल सज्जन भवपीरा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. रामचन्द्र शुक्ल
2. मेहो जी कृत रामायण - डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
3. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास।
5. शक्ल रामचन्द्र, गोस्वामी तुलसीदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
6. त्रिपाठी रामनरेश, तुलसीदास और उनका काव्य, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली
7. द्विवेदी हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. चतुर्वेदी रामस्वरूप, मध्ययुगीन हिन्दी काव्यभाषा, लोक भारती, इलाहाबाद
9. शर्मा रामविलास, परंपरा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

Corresponding Author

Neha Rao*

PhD Scholar, Indian Language Centre, Jawaharlal Nehru University, New Delhi - 110067

www.ignited.in